फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

कहत कबीर

मौत का इन्तजार करना कोई जिन्दगी नहीं होता। वर्तमान समाज व्यवस्था बढती सँख्या में लोगों को मृत्यु की राह देखने वालों में बदल रही है।

नई सीरीज नम्बर 196 अक्टूबर 2004

मसला यह व्यवस्था है (5)

इस-उस नीति, इस-उस पार्टी, यह अथवा वह लीडर की बातें शब्द-जाल हैं, शब्द-आडम्बर हैं

✱राजे-रजवाड़ों के दौर में, बेगार-प्रथा के दौर में मण्डी-मुद्रा का प्रसार कोढ में खाज समान था। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के इंग्लैण्ड-वेल्स-स्कॉटलैण्ड-आयरलैण्ड में भेड़ों ने, भेड़-पालन ने मनुष्यों को जमीनों से खदेड़ा। कैदखानों में जबरन काम करवाने, दागने, फाँसी देने के संग-संग बेघरबार किये गये लोगों को दोहन-शोषण के लिये दूरदराज अमरीका-आस्ट्रेलिया जैसे स्थानों पर जबरन ले जाया गया। उन स्थानों के निवासियों के लिये तो जैसे शामत ही आ गई हो। गुलामी जिनकी समझ से बाहर की चीज थी उन अमरीकावासियों के कत्लेआम किये गये। अफ्रीका से गुलाम बना कर लोगों को अमरीकी महाद्वीपों में काम में जोता गया। ✱फैक्ट्री-पद्धति ने मण्डी-मुद्रा के ताण्डव को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली फैक्ट्री-पद्धति को भाप-कोयले ने, भाप-कोयला आधारित मशीनरी ने स्थापित किया। इसके संग दस्तकारी और किसानी की मौत, दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत आरम्भ हुई। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के कारखानों में 6-7 वर्ष के बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम में जोता गया और ... और बेरोजगार बने-बनते लाखों लोगों के लिये अनजाने, दूरदराज स्थानों को पलायन मजबूरी बने। ✱फ्रान्स-जर्मनी-इटली. ... में फैक्ट्री-पद्धति के प्रसार के संग वहाँ भी आरम्भ हुई दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत लाखों को मजदूर बनाने के संग-संग यूरोप से बड़े पैमाने पर लोगों को खदेड़ना भी लिये थी। अमरीका... आस्ट्रेलिया... लोगों से "भर गये"। ✱बिजली ने रात को भी काम के लिये खोल दिया। फैक्ट्री-पद्धति ने हमारी नींद ही नहीं उड़ाई बल्कि मारामारी का वह अखाड़ा भी रचा कि 1914-19 के दौरान ढाई करोड़ लोग और 1939-45 के दौरान पाँच करोड़ लोग तो युद्धों में ही मारे गये। ✱अब फैक्ट्री-पद्धति में यह इलेक्ट्रोनिक्स का दौर है। फैक्ट्री-पद्धति का प्रसार पृथ्वी के कोने-कोने में और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। इस दौर में एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत तीव्र गति से हो रही है। भारत के, चीन के करोड़ों तबाह दस्तकार-किसान कहाँ जायें? इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा दुनियाँ-भर मे बेरोजगार कर दिये गये, बेरोजगार किये जा रहे करोड़ों मजदूर कहाँ जायें?

40-50 वर्ष पहले जो पहली से पाँचवीं कक्षा के दौरान पढाया जाता था उससे काफी अधिक अब प्री-नर्सरी से यू.के.जी. के दौरान है। पचास वर्ष पहले जो छठी से दसवीं कक्षा के दौरान था उससे काफी ज्यादा आज पहली से पाँचवीं कक्षा के दौरान पढना जरूरी है। कम्प्युटरों का व्यापक प्रवेश क्या गुल खिलायेगा इसकी कल्पनायें करने की आवश्यकता नहीं है — पृथ्वी पर कुछ क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर बच्चे कम्प्युटरों से रूबरू हैं और ऐसे क्षेत्रों का आकार तीव्र गति से बढने के आसार हैं। इन परिवर्तनों तथा विद्यालय में पढाये जाते विषयों और इनके अर्थों पर कुछ विस्तार में चर्चा से पहले आइये विद्यालय-शिक्षा की बुनियादी इकाइयों : **अक्षर व अंक** पर कुछ चर्चा करें।

—विभिन्न क्षेत्रों-भाषाओं में अक्षर व अंक और इनके जोड़-घटा के नियम-उपनियम काफी समय से हैं। लेकिन ढाई-तीन सौ वर्ष पहले तक अक्षर-अंक की पहचान कम ही लोगों को थी। तथ्य है कि इंग्लैण्ड का राजा अनपढ था, इंग्लैण्ड के राजा को हस्ताक्षर करना नहीं आता था इसलिये मेंग्ना कार्टा दस्तावेज पर राजा ने मोहर लगाई। बादशाह अकबर अँगूठाटेक था।

— ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं को टिकाये रखने में शास्त्रों के महत्व को नकारा नहीं गया है और शास्त्रियों के पालनपोषण का अच्छा-खासा प्रबन्ध रहा है। हाँ, व्यापक स्तर पर अक्षर-अंक के प्रसार की आवश्यकता स्वामी समाज व्यवस्था और सामन्ती समाज व्यवस्था को नहीं थी। बल्कि, अक्षर-अंक ज्ञान के प्रसार से दमन-शोषण के कुछ मर्दे उठ जाने के डर से अक्षर-अंक ज्ञान को सीमित, काफी सीमित रखने के लिये बन्धन लगाये जाते थे।

ऊँच-नीच। आधुनिक ऊँच-नीच। अखाड़ा-मण्डी। विश्व मण्डी। होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन का सर्वग्रासी अभियान। स्वयं मनुष्यों का मण्डी में माल बन जाना। यह है वर्तमान समाज व्यवस्था।

— उत्पादन में मशीनें, परिवहन में रेल-ट्रक-जहाज, संचार में डाक-टेलीफोन-इन्टरनेट, अदला-बदली के लिये मुद्रा मण्डी-माल वाली वर्तमान समाज व्यवस्था में तीव्र से तीव्रतर दमन-शोषण के जरिये हैं। इन उत्पादन-परिवहन-संचार-एक्सचेंज साधनों के लिये व्यापक स्तर पर अक्षर-अंक की जानकारी एक अनिवार्य आवश्यकता है। अक्षर-अंक ज्ञान के व्यापक ताने-बाने के बिना भाप-कोयले वाली हों चाहे पैट्रोल या बिजली वाली हों अथवा कम्प्युटरयुक्त मशीनें हों या फिर रुपये-डॉलर हों, इनके उत्पादन व इस्तेमाल की कल्पना तक मुश्किल है। और, विद्यालयों का व्यापक जाल अक्षर-अंक की व्यापक स्तर पर जानकारी सुनिश्चित करने के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता रहा है। अक्षर-अंक और उनके नियमों की शिक्षा देना विद्यालय का प्राथमिक कार्य रहा है। विद्यालयों का व्यापक जाल वर्तमान समाज व्यवस्था की पुनरावृति का जरिया रहा है। आजकल इलेक्ट्रोनिक्स के जरिये विद्यालय को बदल डालने की इच्छाओं-प्रयासों के बावजूद विद्यालयों को वर्तमान समाज व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग के तौर पर देखने-समझने की जरूरत हमें लगती है। विद्या, विद्यालय के आभामण्डल-महिमामण्डन को भेद कर ही इनकी वास्तविकता से रूबरू हो सकते हैं और इनसे निपट सकेंगे।

— उत्पादन-परिवहन-संचार में मशीनों को लाने वाले विज्ञान को मण्डी-माल-मुद्रा का वाहक वाहन कहा जा सकता है। इसलिये विज्ञान की आलोचना वर्तमान समाज व्यवस्था से पार पाने के लिये एक आवश्यक/अनिवार्य प्रस्थान-बिन्दू है। वर्तमान समाज व्यवस्था को विगत की चीज बना डालने के लिये इसी प्रकार अक्षर-अंक के व्यापक प्रसार के वाहक विद्यालय की, ऐसे-वैसे विद्यालय की अथवा विद्यालय के इस-उस पहलू की नहीं बल्कि स्वयं विद्यालय की आलोचना एक अनिवार्यता है। देखने की बात है कि विद्यालयों द्वारा प्रसारित अक्षर-अंक की तकनीकी जानकारी ही अपने आप में कितना अधिक निरंकुश नियन्त्रण लिये है। हाँ, आलोचना का अर्थ सम्पूर्ण को नकारना नहीं होता।

नीति, पार्टी, नेता बदलने से इस सब में कोई फर्क पड़ेगा क्या? (जारी)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स..... (पेज चार का शेष)

कर लेते हैं। उत्पादन कार्य में भर्ती दो ठेकेदारों के जरिये की जाती है – मजदूर का नाम 6 महीने एक ठेकेदार के खाते में रहता है और फिर 6 महीने दूसरे ठेकेदार के खाते में। ई.एस.आई. व पी.एफ. पहले महीने से ही काटते हैं पर 6+6 महीने का फण्ड ठेकेदार जमा नहीं करते – मजदूर का साल-भर का फण्ड खा जाते हैं। कई-कई बरस से लगातार फैक्ट्री में काम कर रहे मजदूर ठेकेदारों के खाते में हैं।

"डाइकास्टिंग विभाग में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं लेकिन फैटलिंग और सी एन सी विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट रहती हैं। इधर जुलाई के आरम्भ से फैटलिंग में 14-14 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – नियम बना रखा है कि सुबह 7 बजे लगे मजदूर को रात 9 बजे और रात 7 बजे लगे को अगले रोज सुबह 9 बजे छोड़ना है। एक कप चाय तक 12-14 घण्टे ड्युटी के दौरान कम्पनी नहीं देती। अरजेन्ट है कह कर 20-34 घण्टे रोकते हैं तब 6 रुपये रोटी के देते हैं। महीने के तीसों दिन, वर्ष में 365 दिन फैक्ट्री में काम होता है – किसी दिवस, किसी त्यौहार को इसमें आड़े नहीं आने देते। दिसम्बर-जनवरी में काम ढीला होता है तब 8 घण्टे की ड्युटी करते हैं और कईयों को नौकरी से निकाल देते हैं।

"प्रबन्धन में ऊँचे पद और मोटी तनखायें नाते-रिश्तेदारों के बीच हैं। अन्य मैनेजरों-सुपरवाइजरों की तनखायें कम हैं पर उन्हें ठेकेदारों, पीस रेट वालों, एक्साइज, ई.एस.आई., श्रम विभाग, अदालत आदि क्षेत्रों में अतिरिक्त कमाई के अवसर जानबूझ कर दिये गये लगते हैं। अपने स्वयं को तबाह करते कुछ अधिकारी रोज 16 घण्टे फैक्ट्री में रहते हैं और मजदूरों को गालियाँ देते हैं, हाथ भी उठा देते हैं। कम्पनी ने उत्पादन इस कदर ज्यादा निर्धारित कर रखा है कि कुछ मामलों में तो अत्याधिक प्रयास के बाद भी पूरा हो ही नहीं पाता। ऐसे में अधिकारियों के पास खुन्दक निकालने व मजदूर को ब्लैकमेल करने के बहुत अवसर रहते हैं। फैक्ट्री में खड़े-खड़े काम करना पड़ता है और ऐसे में निर्धारित उत्पादन नहीं दिया के नाम पर ओवर टाइम के कहीं दो तो कहीं 4 घण्टे कम्पनी रोज खा जाती है। और फिर, ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स में ओवर टाइम का भुगतान 9 रुपये प्रति घण्टा है जबकि सरकार द्वारा अकुशल मजदूर के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन ही 10 रुपये 75 पैसे प्रति घण्टा है – ओवर टाइम के तो 21 रुपये 50 पैसे प्रति घण्टा कम से कम बनते हैं।

"फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं पर कम्पनी में एम्बुलेन्स नहीं है। मई में रात 1 ½ बजे डाइकास्टिंग विभाग में एक मजदूर की चार उँगलियाँ कट गई। चीफ जनरल मैनेजर को फोन किया तो साहब ने कहा कि रिक्शा में बैठा कर ई.एस.आई. अस्पताल भेज दो। जुलाई में रात 2 ½ बजे एक मजदूर की चार उँगलियाँ और अँगूठा कट गये तब उसे रिक्शा पर ई.एस. आई. अस्पताल भेजा। हाथ कटना, पीस उछल कर सिर-मुँह पर लगना, औजार टूट कर छाती में लगना, गर्दे से बेहोश हो जाना अथवा करण, पप्पी, मनोज, सुरेश, मुकेश, जनार्दन की तरह भट्टी पर जल जाना ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स में सामान्य बातें हैं। घायल मजदूर को एक पैसे की मदद भी कम्पनी नहीं देती – नाम काट देती है और ड्युटी पर नहीं लेती।

"दिखाने के लिये 'कैन्टीन हाल' लिख कर प्लॉट 49 की छत की तरफ इशारा है पर वहाँ कोई कैन्टीन नहीं है बल्कि वहाँ उत्पादन से जुड़े कार्य होते हैं। फैक्ट्री में रात की शिफ्ट में तो लन्च ब्रेक होता ही नहीं, दिन में भोजन करने के लिये फैक्ट्री में कोई स्थान नहीं है। ठेकेदार के जरिये 4 सफाई कर्मी रखे हैं जो फैक्ट्री में लैट्रीन-बाथरूम की सफाई के बाद चेयरमैन की कोठी पर काम करते हैं – विभागों में वहाँ कार्य करते मजदूरों को झाड़ू लगानी पड़ती है। कम्पनी ने साइकिल स्टैण्ड फैक्ट्री से बाहर बनाया है – 13 मजदूरों की साइकिलें उठ चुकी हैं पर कम्पनी जिम्मेदारी नहीं लेती। पीने के पानी में कीड़े, पानी का रंग पीला..... पर हाँ, टी वी एस विक्टर मोटरसाइकिल निर्माता ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स की मुख्य पार्टी है और मारुति, जी.ई. मोटर्स, यामाहा, होण्डा सिटी अन्य पार्टियाँ हैं।

" इन हालात में फैक्ट्री के 55-60 प्रतिशत मजदूर टी.बी., कैन्सर, पथरी, पीलिया, नपुंसकता, मलेरिया, फेफड़ों की बीमारियों से ग्रस्त हैं। ड्युटी बाद भोजन भी ठीक से नहीं कर पाते, बस सो जाते हैं, पत्नी दुखी। दारू पीते हैं, दारू के सहारे चल रहे हैं, लन्च में पव्वा पी कर लग जाते हैं – ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स का चेयरमैन राजकुमार जैन यह जानता है।"

न्यूनतम से कम वेतन

हरियाणा में सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर- हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी पर 87 रुपये 16 पैसे और महीने में 4 छुट्टी पर 2269 रुपये 45 पैसे; अर्धकुशल मजदूर को दैनिक 91 रुपये 39 पैसे और मासिक वेतन 2379 रुपये 45 पैसे; कुशल को दैनिक वेतन 97 रुपये 16 पैसे और मासिक 2529 रुपये 45 पैसे; उच्च कुशल मजदूर को दैनिक 108 रुपये 70 पैसे और मासिक वेतन 2829 रुपये 45 पैसे। यह कम से कम तनखायें हैं और 1 जुलाई से लागू हैं – ऑकड़े के 11 अंक से पहली जुलाई से डी.ए. में 25 रुपये 41 पैसे बढ़े हैं (श्रम आयुक्त ने यह जानकारी 9.9.04 को जारी की)। वैसे मुख्यमंत्री ने 25 सितम्बर को कम से कम मजदूरी 100 रुपये प्रतिदिन (8 घण्टे की) करने की घोषणा कर दी है – आदेशों का इन्तजार है।

मौर्या उद्योग, सोहना रोड़, में हैल्परों को 1700 रुपये तनखा; **टालब्रोस,** 74-75 सै-6, में हैल्पर को 1600 रुपये; **गणेश इन्डस्ट्रीज,** 20/6 मथुरा रोड़, में हैल्पर को 60-65 रुपये रोज; **चन्दा इन्टरप्राइजेज,** प्लॉट 1 मुजेसर, में हैल्परों को 1450 रुपये तनखा; **हिन्द हाइड्रोलिक्स,** 13 सै-24, में हैल्पर को 7 रुपये प्रति घण्टा; **सुपर आटो,** 84 सै-6, में हैल्परों की तनखा 1500 रुपये; **एस.डी. इंजिनियरिंग,** 5 सोहना रोड़ सैक्टर-23, में हैल्परों को 1200-1300 रुपये तनखा; **अल्फा टोबो,** 9 एच सै-6, में 60 मजदूरों को 12घण्टे प्रतिदिन काम पर महीने के 2150 रुपये; **अम्बिका फोरजिंग,** 365 सै-24, में हैल्पर को 1600 रुपये महीना तनखा;...

नहीं दी तनखा

अगस्त का वेतन कानून अनुसार 7 सितम्बर से पहले 1000 से कम मजदूरों वाली फैक्ट्रियों में देना था।

इन्डो टैक्स, 3 सैक्टर-25, में 300 मजदूर और अगस्त की तनखा 17 सितम्बर तक नहीं – जुलाई का वेतन 4 सितम्बर को जा कर दिया था (प्रतिदिन 12 घण्टे काम के बदले कारीगरों को महीने के 2200 रुपये); **सिकन्द लिमिटेड,** 61 इन्ड. एरिया, में अगस्त का वेतन 23 सितम्बर तक नहीं; **क्लच आटो,** 12/4 मथुरा रोड़, अगस्त की तनखा स्थाई मजदूरों को 17 सितम्बर को देनी शुरू की और कैजुअल वरकरों को 21 सितम्बर तक देनी आरम्भ नहीं की थी; **जितेन्द्रा कास्टिंग,** 205 सै-24, में जुलाई और अगस्त की तनखायें 17 सितम्बर तक नहीं – भविष्य निधि 1997 से जमा नहीं; **ब्रॉन लैबोरेट्री,** 13 इन्ड. एरिया, में अगस्त का वेतन 17 सितम्बर तक नहीं; **सुपर स्विच,** 5 सै-6, में फरवरी, मार्च, अप्रैल में करवाये ओवर टाइम काम के पैसे 22 सितम्बर तक नहीं दिये

और बातें यह भी

एस.पी.एल. मजदूर : प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में भर्ती के समय कारीगर को 2500 रुपये तनखा बताते हैं पर अन्दर जाते ही पीस रेट पर काम करवाते हैं। इस प्रकार काम का बोझ तो तत्काल बढ़ा ही दिया जाता है, 12 घण्टे ड्युटी भी जरूरी कर रखी है। रेट बहुत कम और पीस रेट पर हो कह कर ओवर टाइम मानते ही नहीं। हम लगातार काम करते रहते हैं पर हर 6 महीने बाद कम्पनी हमारे ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के नम्बर बदलवा देती है – ब्रेक दिखा कर स्थाई की बात ही खत्म कर दी जाती है।"

शिवालिक ग्लोबल वरकर : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी है और 12 घण्टे बाद रोकते हैं तब जनरल मैनजर के हस्ताक्षर वाली पर्ची देने पर ही कैन्टीन में 6 रोटी देते हैं। अगस्त की तनखा आज 21 सितम्बर तक नहीं दी है। लगातार 12 घण्टे और उससे भी ज्यादा समय काम करने के कारण हर समय तनातनी का माहौल रहता है और तू-तड़ाक व धक्का-मुक्की आम बात हैं।"

इन्डीकेशन वरकर : " प्लॉट 3 सैक्टर-5 और प्लॉट 19 सैक्टर-6 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में भविष्य निधि विभाग के छापे के बाद कार्यरत 500 कैजुअल वरकरों में से 75-80 को ही प्रोविडेन्ट फण्ड के दायरे में लाया गया है।"

फर ऑटो मजदूर : "15/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 13 अगस्त से उत्पादन कार्य फिर आरम्भ हो गया है। एक महीने की तनखा दे कर मैनेजमेन्ट ने फर ऑटो वरकरों को 25 महीनों की बकाया तनखायें और मन्चूर मजदूरों को 12 महीनों की बकाया तनखायें भूल जाने को कहा! हम लोग 'चलो चल तो गई' कह कर साँस भी नहीं ले पाये थे कि पुराना ढर्रा फिर सामने आ गया – अगस्त माह की तनखा आज 20 सितम्बर तक नहीं दी है।"

सेक्युरिटी गार्ड : "भविष्य निधि की पर्ची 4 वर्ष पहले मिली थी और उसके बाद कोई पर्ची **ग्रुप फोर** के हम गार्डों को नहीं दी है। कम्पनी 600 रुपये जमा करवा कर वर्ष में तीन वर्दियाँ देती है पर इधर तीसरा वर्ष हो गया है और इस बीच एक ghonhZnhgSt cfl 600+ 600 रुपये जमा करवा लिये हैं।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कुछ बातें थोड़ी विस्तार से

के.के. कोहली एण्ड ब्रॉदर्स मजदूर : "14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 500 वरकर काम करते हैं जिनमें से 35-40 ही स्थाई हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने के तीसों दिन काम करना पड़ता है।

" फैक्ट्री में अन्दरवाले ठेकेदार कम्पनी के कर्मचारी हैं तथा एच.आई. एण्ड एस.एस., कॉप्स, सी.एम.एम. और पी.एच. एस. बाहरवाले ठेकेदार हैं। दोनों ने 150 ऐसे मजदूर रखे हैं जिन्हें 12 घण्टे रोज और महीने के तीसों दिन काम के बदले में 1800-2200 रुपये देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। बाकी 350 मजदूरों की 1800-2200 रुपये महीना तनखा है, ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटे जाते हैं और प्रतिदिन 4 घण्टे तथा रविवार के 12 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से मिलते हैं। निकालने-नौकरी छोड़ने पर ठेकेदार फण्ड के फार्म नहीं भरते। पूछने पर भविष्य निधि अधिकारी कहते हैं कि तीन-चार साल जिनके पी. एफ. के पैसे काटे गये उन मजदूरों के खाते ही नहीं हैं!

" फैक्ट्री में कपड़ों की रंगाई होती है और रसायनों, गर्मी, गैसों से होते बुरे हाल में काम-काम-काम के लिये हर समय सिर पर खड़े रहते हैं। तनखा देरी से – जून की चार किस्तों में 30 जुलाई को जा कर पूरी की और जुलाई की तनखा 21 अगस्त तक देनी शुरू नहीं की थी।"

जय भारत वरकर : "प्लॉट 118 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर काम करते हैं – सब ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। हैल्परों को 1500 रुपये महीना तनखा देते थे और ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं थे। अगस्त में ई.एस.आई. अधिकारियों ने फैक्ट्री पर छापा मारा। अचानक हमारी तनखा 1500 से बढा कर 2250 रुपये करने की घोषणा कम्पनी ने की। लेकिन इधर अगस्त की जो तनखा दी गई है वह पहले जितनी ही है। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. की जो राशियाँ कम्पनी/ठेकेदार ने देनी थी वे भी हम मजदूरों की तनखा से काट ली हैं! फैक्ट्री में ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं और 12 घण्टे बाद रोकते हैं तब एक चाय-मट्ठी व 15 रुपये रोटी के देते हैं।"

शरद मैटल मजदूर : " प्लॉट 45 सोहना रोड़, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में करीब 450 वरकर काम करते हैं जिनमें 25 ही स्थाई हैं। जिन 125 को कम्पनी कैजुअल वरकर कहती है उनकी ई.एस. आई नहीं, पी.एफ. नहीं और 1600-1700 रुपये महीना तनखा है। चार ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूरों में से काफी की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और सब की 2244 रुपये महीना तनखा है। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में से कुछ को कम्पनी वार्षिक वेतन वृद्धि देती है परन्तु यह पैसे ठेकेदारों के जरिये नहीं देती – ओवर टाइम के पैसों के संग यह पैसे कम्पनी स्वयं देती है।"

एन.एस.पी. फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 142 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 3 जुलाई को एक मजदूर के पैर की उँगलियाँ कट गई – कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरी और ई.एस.आई. अस्पताल भेज दिया। छह दिन बाद अस्पताल से छुट्टी, पट्टियाँ जारी। हफ्ते की मेडिकल छुट्टी – ई.एस.आई. लोकल ऑफिस ने उसके पैसे नहीं दिये। उसके बाद डॉक्टर ने मेडिकल छुट्टी दी ही नहीं हालाँकि इलाज चलता रहा। ई.एस.आई. वाले कहते हैं कि कम्पनी से फार्म भरवा कर लाओ और कम्पनी कहती है कि हम कुछ नहीं जानते, ई.एस.आई. जाओ।"

सनग्लो मजदूर : " लक्ष्मीरतन कम्पलेक्स, इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में बल्ब बनाते 20 मजदूरों में 14 महिलायें थी। फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 7 ½ तक काम – 3 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों को 1200 रुपये और ऑपरेटरों को 1800 रुपये महीना तनखा – ई.एस. आई. व पी.एफ. 5 वरकरों के ही। तनखा किस्तों में। मई व जून की तनखायें दी ही नहीं और तनखायें माँगने पर 27 जुलाई को 8 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत की – आज 30 सितम्बर तक 13–14 तारीख पड़ चुकी हैं और अगली 4 अक्टूबर की है। बाहर किये मजदूरों की शिकायत पर ई.एस.आई. व पी.एफ. विभागों ने फैक्ट्री पर छापे मारे। फैक्ट्री में कार्यरत जिन वरकरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं थी उनकी लागू कर दी गई और उन्हें मई-जून-जुलाई की तनखायें दे दी गई हैं – अगस्त की तनखा आज 30 सितम्बर तक बकाया है।"

क्लच आटो वरकर : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मैं, हरीश, कैजुअल वरकर था। कम्पनी ने ब्रेक कर 7 मई को मुझे नौकरी से निकाल दिया लेकिन मेरी मार्च, अप्रैल और मई के 7 दिन की तनखायें 5-6 चक्कर काटने के बाद भी आज, 23 सितम्बर तक नहीं दी हैं। फैक्ट्री 24 घण्टे चलती है हालाँकि दो शिफ्ट ही हैं – दूसरी शिफ्ट 16 घण्टे की है, उसमें रोज 8 घण्टे ओवर टाइम काम होता है। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगनी दर से किया जाता है और कैजुअलों को डेढ की दर से। फरवरी, मार्च तथा अप्रैल में किये ओवर टाइम के पैसे भी आज 23 सितम्बर तक मुझे नहीं दिये हैं।"

भूपेन्द्रा स्टील मजदूर : "प्लॉट 25 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 5-6 बच्चे भट्ठी पर 1400 रुपये महीना तनखा में 12 घण्टे रोज काम करते हैं और बच्चों से इन्चार्ज गाली दे कर बात करते हैं। कम्पनी ने 100 वरकर स्वयं रखे हैं और 150 को 5 ठेकेदारों के जरिये रखा है। स्वयं रखों को कम्पनी 7 तारीख को तनखा दे देती है लेकिन ठेकेदारों के जरिये रखों को अगस्त की तनखा आज 18 सितम्बर तक नहीं दी है। हैल्परों को 1500 रुपये और ऑपरेटरों को 1800 रुपये महीना तनखा देते हैं – अधिकतर मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। गर्म काम है और एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं – जल जाते हैं। उपचार के लिये प्रायवेट में भेजते हैं, इलाज के दौरान का वेतन नहीं देते।"

इण्डोपोल वरकर : "प्लॉट 17 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में 2-3 स्थाई मजदूर, 7-8 कैजुअल और 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 50-55 वरकर काम करते हैं। फैक्ट्री में सुबह 8 ½ से 5 बजे तक एक शिफ्ट है और उसके बाद रोज 4 घण्टे ओवर टाइम काम। हैल्परों को 1400-1500 रुपये महीना तनखा देते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा आज 21 सितम्बर तक नहीं दी है – जुलाई का वेतन 24 अगस्त को जा कर दिया था।"

डी.पी. ऑटो मजदूर : "प्लॉट 228 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1500 रुपये महीना तनखा देते थे। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम 2244 रुपये तो कम से कम दो ही की बात मजदूरों ने 10 सितम्बर को मैनेजमेन्ट से कही। अगले रोज, 11 सितम्बर को कम्पनी ने गेट बन्द कर दिया, पुलिस बुला ली और सब मजदूरों को निकाल दिया। हम ने श्रम विभाग में शिकायत की और 14 सितम्बर को श्रम निरीक्षक ने फैक्ट्री आना था पर आज 17 तक नहीं आया है।"

सोनिया टैक्सटाइल्स वरकर : "प्लॉट 32 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में इस समय स्वेटर विभाग बन्द है और टी-शर्ट विभाग में कम्पनी ने स्वयं 60-65 वरकर तथा दो ठेकेदारों के जरिये 300-350 मजदूर रखे हैं। स्वेटर वाले सब वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे थे और उनकी ड्युटी सुबह 9 से रात 2 बजे तक। टी-शर्ट विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर ओवर टाइम 4 की जगह 2 घण्टे का दिखाते हैं। ओवर टाइम का दुगनी दर से भुगतान पर हस्ताक्षर करवाते हैं जबकि देते सिंगल दर से हैं।"

इन्जेक्टो मजदूर : "20/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये 36 वरकर रखे हैं जिनमें से 7 तो 13-14-15 वर्ष के लड़के हैं जिन्हें 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। ऑपरेटरों को ठेकेदार 1400-1600 रुपये देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री के बाहर भी 100 लोग इन्जेक्टो लिमिटेड का जॉब वर्क करते हैं। और, स्थाई मजदूरों को कम्पनी खाली बैठा रही है, कम काम दे रही है, हैल्परी करवा रही है।

"यह सस्ते दर सस्ते में काम करवाने की कम्पनी की नीति है जिसके तहत इन्जेक्टो मैनेजमेन्ट स्थाई मजदूरों को 4 वर्ष से तरह-तरह से परेशान कर रही है ताकि वे नौकरी छोड जायें। तनखायें बकाया की गई। उप श्रमायुक्त के यहाँ किये जाते मैनेजमेन्ट-यूनियन तनखा देने के समझौते लागू नहीं किये जाते। यूनियन के नाकारा साबित होने, कम्पनी-यूनियन मिलिभगत लगने पर कुछ मजदूरों ने स्वयं कदम उठाने शुरू किये। इससे श्रम अधिकारी बार-बार परेशान हुये और ऐसे में उप श्रमायुक्त ने मामला एस.डी.एम. के पास भेज दिया। 20.1.04 को एस.डी.एम. के यहाँ 30 जून तक बकाया तनखाओं का भुगतान करना तय हुआ। और 30 जून को 4 महीनों की तनखायें बकाया। मजदूरों ने फिर श्रम विभाग के दरवाजे खटखटाये। उप श्रमायुक्त ने बला टालने के लिये फिर मामला एस.डी.एम. को भेजा। यूनियन पर निर्भर रहने की बजाय मजदूरों द्वारा स्वयं कदम उठाने से परेशान कम्पनी, श्रम विभाग, प्रशासन, यूनियन व उसकी सरपरस्त प्रान्त की शासक पार्टी के स्थानीय नेताओं ने जाल रचा। बकाया तनखाओं के भुगतान की आड़ में 14 सितम्बर को एस.डी.एम. के यहाँ कुछ मजदूरों की सहमति से ऐसा समझौता किया गया है कि स्थाई मजदूर नहीं चेते तो उनकी आसानी से और सस्ते में छँटनी कर दी जायेगी।"

दिल्ली से–

माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूर : "बी– 156 ओखला फेज–I स्थित फैक्ट्री में 3 अगस्त को अचानक मजदूरों पर हमला बोलने वाली कम्पनी को 16 सितम्बर को पीछे हटना पड़ा है। जो बर्खास्त– निलम्बित– गेट बाहर किये मजदूर डटे रहे उन सब को 17 सितम्बर को बिना शर्त ड्युटी पर ले लिया गया है।

"अचानक 3 अगस्त को 4 मजदूरों को नौकरी से निकालने का गेट पर नोटिस और फिर शर्तों पर हस्ताक्षर के जाल द्वारा 10 अगस्त को सब मजदूरों को गेट बाहर किया। फिर 16 अगस्त को 12 मजदूरों के निलम्बन का नोटिस। मजदूरों द्वारा श्रम विभाग में शिकायत और श्रम विभाग अधिकारियों की मदद से मैनेजमैन्ट ने 5+11+12 मजदूरों का हिसाब किया – कुछ नौकरी छोड़ने वाले भी सहकर्मियों के इस्तीफे लिखवाने में मैनेजमेन्ट के सहयोग में सक्रिय रहे। श्रम विभाग में 17, 24, 27 अगस्त व 3 सितम्बर की तारीखों पर कम्पनी उपस्थित ही नहीं हुई और फिर 13 सितम्बर की तारीख बदल कर 16 सितम्बर की गई। लालच, धमकी, तोड़फोड़ के खिलाफ कदमों और अपने स्वयं के तालमेलों के बारे में हम मजदूरों ने सुनी कइयों की पर कदम स्वयं उठाये। यह हमारा सौभाग्य रहा कि डॉ. अनिमेश दास के रूप में हमें ईमानदार यूनियन लीडर मिले जिन्होंने श्रम विभाग में कम्पनी के खिलाफ अहम भूमिका निभाई। हम ने कम्पनी के करमों– कुकर्मों की पोल खोलने के लिये हाथ से पर्चे लिखे और ओखला औद्योगिक क्षेत्र, मजदूर बस्तियों, श्रम विभाग कार्यालय में लगाये – विभिन्न अधिकारियों को शिकायतें तो हम ने की ही। मैनेजर घर– घर जा कर 15 सितम्बर तक हमें तोड़ने की कोशिश करता रहा। बन्द कमरों में क्या हुआ इसका हमें पता नहीं पर 16 सितम्बर को श्रम विभाग में झुक कर कम्पनी ने समझौता किया। हम में से 28 नौकरी छोड़ गये पर 17+2 को ड्युटी पर लेना पड़ा है। यह हमारी कोई बड़ी जीत नहीं है पर यह कम्पनी की हार अवश्य है। कम्पनी और मजदूरों के बीच अशान्ति के स्तर होते हैं, शान्ति नहीं हो सकती – यह अहसास हमें जो घटा है उसका मनन– मन्थन करने और भविष्य के लिये विचार करने को प्रेरित कर रहा है।"

बृजवासी आर्ट प्रेस वरकर : "ई– 46/11 ओखला फेज– II स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1500– 1700 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। सामान्य तौर पर 4 घण्टे रोज ओवर टाइम काम रहता है – ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

एक्स एल आर्थोमेड मजदूर : "ई– 25 बी– 1 एक्सटैन्शन मोहन को– ऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर के तहखाने में एक्स एल आर्थोमेड है और ऊपर की तीन मंजिलों में स्टेरीकट गैस्ट्रिंग। यहाँ हैल्परों को मार्च 04 तक 1600 रुपये महीना तनखा देते थे जिसे अप्रैल में बढा कर 1800 रुपये कर दिया। दो घण्टे रोज तो ओवर टाइम होता ही था, कई बार पूरी रात रोक लेते और ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से। लेकिन इधर पहली अगस्त से मैनेजमेन्ट ने 10 घण्टे की ड्युटी कर दी है और इसके बदले महीने में 2250 रुपये देगी – दस घण्टे की ड्युटी कर कम्पनी ने ओवर टाइम के पैसे डेढ की जगह सिंगल दर से कर दिये हैं। ऑपरेटरों की भी 10 घण्टे की ड्युटी कर दी है और उनकी तनखा भी सरकारी रेट से कम है। पाँच– छह साल से काम कर रहे वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड अब देने शुरू किये हैं। मजदूरों की शिकायत पर 10 अगस्त को शाम 4 बजे भविष्य निधि विभाग ने फैक्ट्री पर छापा मारा तब कम्पनी ने 7 की बजाय 4 ½ बजे ही छुट्टी कर दी। एक्स एल आर्थोमेड के जिन 30 का पी.एफ. नहीं है उन्हें 11 अगस्त को फैक्ट्री के अन्दर नहीं आने दिया – उन्हें 12 अगस्त से ड्युटी पर लिया। अब यह फैक्ट्री फरीदाबाद में शिफ्ट कर दी है।"

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 48– 49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मजदूरों पर नजर रखने के लिये कम्पनी ने 50 कैमरे भी लगाये हैं – 2 कैमरे मेन गेट पर, 2 डिस्पैच में, 4 कैमरे फैटलिंग विभाग में, 25 कैमरे डाइकास्टिंग विभाग में, 2 भट्टियों पर, एक कैमरा अकाउन्ट्स विभाग में, एक गोदाम में, सीढियों पर दो, गैलरी जहाँ मजदूर खाना खाते हैं वहाँ दो कैमरे..... निगरानी के लिये मैनेजरों– सुपरवाइजरों वाला 115 लोगों का स्टाफ तो है ही। कम्पनी ने ग्रुप फोर तथा एच आई एस.एस के जरिये 50 सेक्युरिटी गार्ड रखे हैं – दो गार्ड कम्पनी ने स्वयं भी भर्ती कर रखे हैं। और.... और शनिवार को रात 3 बजे कम्पनी चेयरमैन फैक्ट्री में आ कर कहीं लौंग गिराता है, कहीं पर सिन्दूर गिराता है!

" ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स में 25 स्थाई मजदूर, कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये जाते लगभग 200 कैजुअल वरकर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे करीब 400 मजदूर काम करते हैं। कैजुअलों को हर 6 महीने बाद निकाल देते हैं, नये सिरे से भर्ती **(बाकी पेज दो पर)**

उह कल्पना!

अन्तरिक्ष में बोना मौत के बीज

"मैं खुश हूँ कि अन्तरिक्ष यान ध्वस्त हो गया" – सन् 2003 में शिकागो, अमरीका से प्रकाशित पत्रिका 'लुम्पेन' के अंक 88 में एक शीर्षक। लेखक अल बुरियन ने 1फरवरी 03 को अन्तरिक्ष यान 'कोलम्बिया' के ध्वंस की चर्चा की है।

अमरीका में कम ही लोगों को 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान अभियान की जानकारी थी – चर्चा में इराक अभियान था और राष्ट्रपति बुश ने एक दिन पहले ही कहा था कि आक्रमण महीनों में नहीं बल्कि हफ्तों में होने वाला था। इजराइ में यह अन्तरिक्ष अभियान सुर्खियों में था क्योंकि इजराइल का एक नागरिक अन्तरिक्ष यान में था और.... और यह रोज– रोज के रक्तपात से ध्यान हटाना लिये था। भारत में भी 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष अभियान व्यापक चर्चा में था क्योंकि भारतीय मूल की एक अमरीकी नागरिक अन्तरिक्ष यान में थी और... और यह मौत का इन्तजार करने को जीवन कहने में कुछ फेरबदल लिये था।

1 फरवरी 03 को सात अन्तरिक्ष यात्रियों की दुखद मृत्यु हुई। अमरीका सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शोक ने इराक पर आक्रमण को हफ्ते– दो हफ्ते टाला। भारत में मातमी तमाशों ने अन्तरिक्ष अभियानों की हकीकत को भावनाओं– इच्छाओं– आकांक्षाओं की धुन्ध में लपेटा।

अन्तरिक्ष अभियान सरकारों के सैन्य अभियान हैं। यह अभियान कम्पनियों के औजार भी हैं। 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान से पहले 'चैलेन्जर' अन्तरिक्ष यान 1986 में ध्वस्त हुआ था। बाद में अमरीका सरकार के अन्तरिक्ष अभियान वैज्ञानिकों ने बताया था कि खुशकिस्मती से 'चैलेन्जर' द्वारा भेजे जा रहे सामान के तौर पर प्लूटोनियम को स्थगित कर दिया गया था। अगर.... अगर परमाणु कार्यक्रमों का वह कचरा अन्तरिक्ष यान के सामान में होता तो 'चैलेन्जर' का ध्वंस प्लूटोनियम को वायुमण्डल में बिखेर देता और इस प्रकार पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति की कैंसर से सम्भावित मृत्यु का एक प्रबन्ध कर जाता। अणु बम बनाना और अणु विद्युत उत्पादन अपने संग प्लूटोनियम जैसा खतरनाक कचरा लिये हैं। पृथ्वी पर इस कचरे को ठिकाने लगाना बेहद खतरनाक– बेहद महँगा पाने के बाद इसे अन्तरिक्ष में फेंकने का सिलसिला आरम्भ किया गया है। सम्भावनाओं का खेल खेलते वैज्ञानिकों ने लगातार दो अन्तरिक्ष यानों के ध्वंस की सम्भावना बहुत कम सोच कर 'चैलेन्जर' के तत्काल बाद वाले अन्तरिक्ष यान के सामान के तौर पर उस प्लूटोनियम को अन्तरिक्ष में भेजा। क्या 'कोलम्बिया' अन्तरिक्ष यान पर प्लूटोनियम जैसा कचरा था? अमरीका सरकार नहीं बतायेगी। दस– बीस वर्ष बाद मृत्यु की बारिश से हमें यान पर खतरनाक कचरा होने का पता चलना कैसा रहेगा?

और पृथ्वी पर : – हिमालय में नन्दा देवी शिखर पर 40– 45 वर्ष पहले भारत व अमरीका सरकारों द्वारा चीन सरकार के खिलाफ लगाया आणविक यन्त्र बर्फीले तूफान में खो गया। उस एटमी यन्त्र के कवच में अगर दरार पड़ गई तो आणविक विकिरणें गँगा के पानी को हजारों वर्ष तक जीवनदायी से मृत्युवाहक जल में परिवर्तित कर देंगी।

– 1958 में प्रशिक्षण– अभ्यास के दौरान विमानों के टकराने के कारण उत्पन्न हुये आपातकाल में अमरीका सरकार के बमवाहक विमान ने एक हाइड्रोजन बम को अटलांटिक महासागर में गिरा दिया। वह हाइड्रोजन बम महासागर में खो गया और 46 वर्ष से जीवन के लिये, पर्यावरण के लिये खतरा बना हुआ है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।